9. नंदलाल जोशी

कवि परिचय

कविवर नंदलाल जोशी का जन्म बाड़मेर में हुआ। पढ़ने में अत्यंत मेधावी, सबसे आगे रहने वाले नंदलाल जोशी ने कक्षा 11 तक की शिक्षा बाड़मेर में प्राप्त की, तदुपरान्त उच्च शिक्षा हेतु जोधपुर आ गए। जोधपुर के एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज से आपने सन् 1968 में माइनिंग में बी.ई. की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। उच्च शिक्षित एवं स्वर्ण पदक विजेता होने के कारण आपको कई बड़ी कंपनियों ने उच्च पदों पर नौकरी के प्रस्ताव दिए। आपने माँ भारती की सेवा करने का मार्ग चुना, न कि नौकरी का। आप अविवाहित रहकर देश सेवा में लीन हैं। आज भी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवार्थ लगा रखा है।

विज्ञान के विद्यार्थी होते हुए भी आप में काव्य प्रतिभा जन्म से ही थी। आपकी पूज्य माताजी ने कृष्ण लीला के पदों को गा–गाकर आपकी बीज रूप काव्य प्रतिभा को पुष्पित एवं पल्लवित किया। आपने अब तक 211 राष्ट्र प्रेम के गीत तथा 161 ईश भक्ति के भजनों की रचना की और उन्हें अपना स्वर दिया है। आपकी ये सब रचनाएँ 'प्रेरणा पुष्पांजलि' एवं 'भक्ति हिलौरें' नामक पुस्तकों में प्रकाशित हैं। आपकी रचनाएँ जहाँ ईश भक्ति की गंगा प्रवाहित करती हैं, वहीं राष्ट्र प्रेम का ज्वार उठाती हैं। योग गुरु बाबा रामदेव आपकी रचना ''मन मस्त फकीरी धारी है, अब एक ही धुन जय जय भारत'' को राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर गा–गाकर लोगों को मस्त कर रहे हैं।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ में श्री नंदलाल जोशी के दो गीत लिए गए हैं। हिंदी साहित्य में गीत लेखन की परंपरा है। गीत में नाद और भाव का प्राधान्य होता है। भक्ति और प्रेम भाव को लेकर अनेक गीतों की रचना होती रही है। सोहनलाल द्विवेदी के राष्ट्रभक्ति गीत प्रसिद्ध हैं। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में भी विविध देशभक्ति गीतों का सहज समावेश है। भक्ति जब राष्ट्र के प्रति हो, प्रेम का केंद्र बिंदु मातृभूमि हो तो ऐसे गीतों की सृष्टि होती है।

प्रथम गीत 'देश उठेगा' में भारत को स्वावलंबी और स्वाभिमानी बनाने की न केवल कामना है, बल्कि इसी मार्ग से भारत विश्व में अग्रणी हो सकता है। कवि देशवासियों को आह्वान करता है कि केवल अधिकारों के प्रति जागरुक होने से काम नहीं चलने वाला, हमें अपने कर्तव्यों को भी नहीं भूलना चाहिए। द्वितीय गीत 'गौरवशाली परम्परा' में कवि ने भारत के अतीत गौरव का चित्रण किया है। प्राचीन काल में हम ज्ञान–विज्ञान में विश्व में सिरमौर थे, तभी तो यहाँ विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति पल्लवित–पुष्पित हुई।

देश उठेगा

देश उठेगा अपने पैरों निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर जीयें सुख सम्मान से।।
देश उठेगा ।।ध्रु०।।
परावलम्बी देश जगत में, कभी न यश पा सकता है।

मृग तृष्णा में मत भटको, छीना सब कुछ जा सकता है।।
मायावी संसार चक्र में कदम बढ़ाओ ध्यान से।
अपने साधन नहीं बढ़ेंगे औरों के गुणगान से.....।।1।।
इसी देश में आदिकाल से अन्न, रत्न, भण्डार रहा।
सारे जग को दृष्टि देता, परम ज्ञान आगार रहा।।
आलोकित अपने वैभव से, अपने ही विज्ञान से।
विविध विधाएँ फैली भू पर अपने हिन्दुस्तान से.....।।2।।
अथक किया था श्रम अनगिन जीवन अर्पित निर्माण में।
मर्यादित उपभोग हमारा, पवित्रता हर प्राण में।।
परिपूरक परिपूरण सृष्टि, चलती ईश विधान से।
अपनी नव रचनाएँ होंगी, अपनी ही पहचान से.....।।3।।
आज देश की प्रज्ञा भटकी, अपनों से हम टूट रहे।
क्षुद्र भावना स्वार्थ जगा है, श्रेष्ठ तत्व सब छूट रहे।।
धारा 'स्व' की पुष्ट करेंगे समरस अमृत पान से।
कर संकल्प गरज कर बोले, भारत स्वाभिमान से.....।।4।।
केवल सुविधा अधिकारों की भाषा अब हम नहीं कहें।
हों कर्त्तव्य परायण सारे, अवसर सबको सुलभ रहें।।
माँ धरती को मुक्त करेंगे, दुःख दुविधा अपमान से।
जय जय अम्बर में गूंजेगा सभी दिशा उत्थान से.....।।5।।
देश विघातक षड्यन्त्रों के जाल बिछे हैं सावधान।
इस माटी को प्रेम करे जो, बस उनको ही अपना मान।।
कोई ऊपर नहीं रहेगा, भारत के संविधान से।
देश द्रोहियों को कुचलेंगे, देश भक्त की शान से.....।।6।।
देश उठेगा अपने पैरों निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर जीयें सुख सम्मान से।।

गौरवशाली परम्परा

आदिकाल से अखिल विश्व को, देती जीवन यही धरा।
गौरवशाली परम्परा....
जीवन की आदर्श चिन्तना, परिपूरण परिपक्व विचार
कालातीत है दर्शन अपना, आत्मवत् सब सृष्टि निहार
सारा जग परिवार हमारा, पूज्या माता वसुन्धरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।1।।
परमेश्वर के रूप अनेकों, अपने अपने मार्ग विशेष
श्रद्धा भक्ति अक्षय निष्ठा, नहीं किसी से राग न द्वेष

विविध पंथ वैशिष्ट्य सुवासित, एक सत्य का भाव भरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।2।।
शील सत्य संयम मर्यादा, शुद्ध विशुद्ध रहा व्यवहार
करुणा प्रेम सहज सा छलका, सेवा तप ही जीवन सार
अमर तत्व के अमर पुजारी, विष पीकर भी नहीं मरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।3।।
सघन ध्यान एकाग्र ज्योति से, किये गहनतम अनुसंधान
कला शिल्प संगीत रसायन, गणित अणु आयुर्विज्ञान
सभी विधाएँ आलोकित कर, महिमामय भूलोक वरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।4।।
शौर्य पराक्रम अतुल तेज से, वीरोचित आया भूडोल
आयुध सज्जित अगणित योद्धा, नेत्र तीसरा फिर से खोल
शीश कटा पर देह लड़ी थी, स्वयं काल भी यहीं डरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।5।।
आत्म चेतना नव–आभा ले, फिर से भारत राष्ट्र खड़ा
विराट् शक्ति प्रगटे गरजे, दुष्ट दलन हो कदम कड़ा
तुमुल घोष जयनाद करेगा, अपनाओ स्वधर्म जरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।6।।

•••

शब्दार्थ

परावलम्बी–दूसरों पर आश्रित/ आगार–भंडार/ आलोकित–प्रकाशित/ क्षुद्र–छोटा, तुच्छ/ कालातीत–काल से परे/ सुवासित–सुगंधित/ आयुध–अस्त्र–शस्त्र/ तुमुल–उच्च स्वर में।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'शील' का शाब्दिक अर्थ है –
   (क) ज्ञान (ख) गुण
   (ग) स्वभाव (घ) चरित्र ( )
2. मर्यादित का विलोम शब्द है –
   (क) संयमित (ख) स्वतंत्र
   (ग) उच्छृंखल (घ) परतंत्र ( )

उत्तरमाला – (1) घ (2) ग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. किस प्रकार का देश यश प्राप्त नहीं कर सकता ?
2. हमारा उपभोग किस प्रकार का था ?
3. कवि ने किस प्रकार के लोगों को अपना मानने को कहा है ?

4. ''विष पीकर भी नहीं मरा'' पंक्ति में किस पौराणिक घटना की ओर संकेत किया गया है?
5. गहनतम अनुसंधान के लिए क्या आवश्यक है ?

लघूत्तरात्मक

1. प्राचीन भारत का निर्माण किस प्रकार के पुरुषार्थ से संभव हुआ ?
2. 'ईश विधान से संचालित सृष्टि' से क्या आशय है ?
3. ''अपने–अपने मार्ग विशेष'' में भारत की कौनसी परंपरा का बोध होता है ?
4. 'कालातीत दर्शन' से क्या आशय है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. 'नेत्र तीसरा फिर से खोल' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'अपनी नव रचनाएँ होंगी, अपनी ही पहचान से।' पंक्ति के माध्यम से भारत की समृद्धि के रहस्य पर प्रकाश डालिए।
2. 'मायावी संसार चक्र में, कदम बढ़ाओ ध्यान से' पंक्ति के माध्यम से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. अधिकार और कर्तव्यों के समन्वय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'गौरवशाली परम्परा' गीत में भारत की किन–किन परंपराओं का उल्लेख हुआ है ? विस्तार से बताइए।

•••

यह भी जानें

योजक चिह्न (हाइफन –)

(क) योजक चिह्न (हाइफन) का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

(ख) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए। जैसे – राम–लक्ष्मण, शिव–पार्वती, चाल–चलन, हँसी–मज़ाक, लेन–देन, पढ़ना–लिखना, खाना–पीना, खेलना–कूदना आदि।

(ग) सा, से, सी आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए। जैसे – तुम–सा, चाकू–से तीखे।

(घ) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं। जैसे – भू–तत्व। सामान्यतः तत्पुरुष समास में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है। जैसे – राजराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

(ङ) इसी तरह यदि 'अ–नख' (बिना नख का) समस्त पद में हाइफन न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ–नति (नम्रता का अभाव), अनति (थोड़ा), अ–परस (जिसे किसी ने न छुआ हो), अपसर (एक चर्म रोग), भू–तत्व (पृथ्वी तत्व), भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न–भिन्न शब्द हैं।

(च) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे – द्वि–अक्षर न कि द्व्यक्षर; द्वि–अर्थक न कि द्व्यर्थक, त्रि–अक्षर न कि त्र्यक्षर आदि।

•••